Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

विभाजन के केन्द्र में तमस

Bhaskar Mishra*

Research Student, Visva-Bharati Shanti Niketan, West Bengal

***सार** – साम्प्रदायिक तनाव और हिंसा की त्रासदी से पूर्ण तमस दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें पृष्ठभूमि के रूप में भी घटनाओं के रूप में भी भारत विभाजन के संदर्भ में व्यापक प्रतिक्रिया व्यक्त की गई है। इस उपन्यास के लेखक भीष्म साहनी हैं। झरोखे और कड़िया जैसे परस्पर विरोधी आयामी उपन्यासों के बाद ''तमस'' का आना भीष्म साहनी की एक और सृजनात्मक उपलब्धि है। तमस उपन्यास के सृजन के केन्द्र में भीष्म साहनी की बहुचर्चित कहानी 'अमृतसर आ गया' (प्रकाशन 1971-72) है। जो सम्पूर्ण सांस्कृतिक हादसे में से अध्येताओं को गुजारती है। साम्प्रदायिक राजनीति के क्रुर प्रसंगों में भय और संत्रास से परिचित कराती है। मानवीय संबंधों और मूल्यों के विघटन पर प्रश्न चिन्ह लगाती है। 'अमृतसर आ गया' कहानी अपने कलात्मक संयम वैचारिक निष्पक्षता तथा खुलेपन के कारण प्रशंसा का विषय बनी।*

---------------------------------x---------------------------------

परिचय

तमस भीष्म साहनी का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। इसका प्रकाशन 1973 में हुआ था। वे इस उपन्यास से साहित्य जगत में बहुत लोकप्रिय हुए थे। तमस को 1975 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। इस पर 1986 में गोविंद निहलानी ने दूरदर्शन धारावाहिक तथा एक फिल्म भी बनाई थी।

''तमस'' की कथा परिधि में अप्रैल 1987 के समय में पंजाब के जिले को परिवेश के रूप में लिया गया है। ''तमस'' कुल पांच दिनों की कहानी को लेकर बुना गया उपन्यास है। परंतु कथा में जो प्रसंग संदर्भ और निष्कर्ष उभरते हैं, उससे यह पांच दिवस की कथा न होकर बीसवीं सदी के हिंदुस्तान के अब तक के लगभग सौ वर्षों की कथा हो जाती है। यों संपूर्ण कथावस्तु दो खंडों में विभाजित है। पहले खंड में कुल तेरह प्रकरण हैं। दूसरा खंड गांव पर केंद्रित है। ''तमस'' उपन्यास का रचनात्मक संगठन कलात्मक संधान की दृष्टि से प्रशंसनीय है। इसमें प्रयुक्त संवाद और नाटकीय तत्व प्रभावकारी हैं। भाषा हिन्दी, उर्दू, पंजाबी एवं अंग्रेजी के मिश्रित रूप वाली है। भाषायी अनुशासन कथ्य के प्रभाव को गहराता है। साथ ही कथ्य के अनुरूप वर्णनात्मक, मनोविशेषणात्मक एवं विशेषणात्मक शैली का प्रयोग सर्जक के शिल्प कौशल को उजागर करता है।

भारत विभाजन की पूर्व पीठिका

{1} भारत - विभाजन बनाम देश विभाजन से आशय - किसी देश की भूमि का टुकड़ों में बंट जाना ही विभाजन है। सम्पूर्ण भारत का प्राचीन रूप 'आर्यावर्त' के नाम से जाना जाता था। सर्वत्र एक ही धर्म और संस्कृति का प्रसार-प्रसार था, यद्यपि हम जिसे हिन्दू धर्म या संस्कृति कहते हैं, वह एक मिश्रित संस्कृति और धर्म का प्रारूप है। भारतीय धर्म और संस्कृति पर इस्लाम का अधिक प्रभाव देखा जाता है। इसका वास्तविक स्वरूप यदि देखना हो तो, मध्यकालीन सूफी साहित्य में देखा जा सकता है। सूफियों ने भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर जिस उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया, उसे हम हिन्दी साहित्य का आदर्श मानते हैं। जब भारतवर्ष का विभाजन हुआ तो संस्कृति और धर्म, भी दो रूपों में विभाजित हो गई।

विश्व के धर्म - विश्व में 4 प्रमुख हैं- हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, तथा इस्लाम इनमें तीन के प्रवर्तक कोई न कोई आचार्य या आप्तपुरुष है जैसे गौतम बुद्ध, ईसा, मुहम्मद पैगम्बर ये तीनों धर्म आचार्य-प्रधान होने के कारण शाश्वत सनातन उपज न होकर अन्वेषण ही है. किसी आप्तपुरुष के अनुभवों संकलन ही इनमें हैं। सत्य को जिस रूप में उस आचार्य विशेष ने अनुभूति की अथवा प्रत्यक्षीकरण किया उसे ही प्रकारान्तर से किसी धर्म पुस्तिका का रूपदेकर अथवा विधि निषेध की

व्याख्या करते हुए उपासना एवं सदाचरण के नियमों के रूप में संग्रहित किया गया है।[1]

महात्मा गाँधी ने कहा है 'कोई भी संस्कृति जीवित नहीं रह सकती यदि वह अपने को अन्य संस्कृतियों से पृथक् रखने का प्रयास करती है।'

भगवान वेदव्यास महाभारत में कहते हैं कि सावधान होकर धर्म का वास्तविक रहस्य सुनो और उसे सुनकर उसी के अनुसार आचरण करो जो कुछ तुम अपने लिये हानिप्रद और दुखदायी समझते हो उसे दूसरों के साथ कदापि न करो

"श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।"

डॉ. जानसन ने लिखा है- मानव तथा ईश्वर दोनों की कसौटी में जो खरा उतरे वही धर्म है। जिसे 'आर्यावर्त' कहा जाता है, धर्म और संस्कृति की दृष्टि से उसका वास्तविक रूप ऐसा ही था, किन्तु भारत-विभाजन के बाद इस विचारधारा में व्यापक परिवर्तन हुआ। इस्लाम हिन्दुत्व पर हावी हो गया।

{2} भारत-विभाजन की घटना के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों का विवरण - ब्रिटिश साम्राज्यवाद और देश विभाजन की पूर्ववर्ती पृष्ठ भूमि- भारत 16वीं शताब्दी में भारत की गौरव गाथा बुलंदियों पर थी, भारत सम्पूर्ण विश्व में 'सोने की चिड़िया' के रूप में अधिष्ठित हो चुका था। सारा विश्व भारत के साथ व्यापारिक संबंध कायम करने हेतु प्रयासरत था, इसका शुभारम्भ यूरोपियों ने किया। मुगल साम्राज्य अंतिम सांसे ले रहा था, अंग्रेज ने इस स्थिति का लाभ उठाकर बिखरते हुए मुगल साम्राज्य की वेदी पर राजनैतिक प्रभुत्त्व जमाने की बात सोची। इस संघर्ष में विजयश्री अंग्रेजों ने हासिल की एवम् उनके लिये राज्य प्रसार का खुला मार्ग प्रशस्त हो गया। तत्पश्चात् सन् 1600 में अंग्रेजों ने व्यापारिक संबंध कायम करने हेतु "ईस्ट इंडिया कंपनी" की स्थापना की।

साहित्य की समीक्षा

भारतवर्ष के प्रति 'फूट डालो और राज करो' की नीति का परिचय अंग्रेज प्रारंभ से ही दे रहे थे। वे जानते थे कि सांस्कृतिक दृष्टि से भारत में मुसलमानों का हिन्दुओं के साथ सामंजस्य स्थापित हो ही नहीं सकता।।

मनीषीगण धर्म को सम्प्रदाय से अलग मानते हैं। धर्म मानवता की व्यापक पृष्ठभूमि पर आधारित होता है, जबकि सम्प्रदाय एक विशिष्ट विचारधारा मात्र है, जिसके तहत काफी सीमा तक पूर्वाग्रह का समावेश होता है। भारतीय ऋषि के द्वारा सत्य की स्थापना को धर्म मानते रहे हैं।

सत्यान्वेषण मात्र उनके द्वारा अनुभूत अथवा प्रत्यक्षीकृत सत्य ही होता है, पूर्ण सत्य नहीं। यही कारण है कि हिन्दू धर्म में किसी भी ऋषि मनीषी संत अथवा आप्त पुरूष को प्रवर्तक के रूप में माना ही नहीं गया है।

कोई देश जब राजनैतिक रूप से किसी देश पर विजय प्राप्त करता है तो उसकी यह विजय मात्र राजनैतिक नहीं होती उस विजय के द्वारा वह उस देश की संस्कृति, धर्म, सामाजिक रीति-नीति सभी को प्रभावित करता है- राजनैतिक विजय से अधिक खतरनाक सांस्कृतिक विजय है।

इस्लाम तथा अंग्रेजों के विजय में अंतर रहा है. अंग्रेजों ने धर्म पर उस सीमा तक कुठाराघात नहीं किया जिस सीमा तक इस्लाम ने किया। धर्म परिवर्तन तो अंग्रेज मिशनरियों ने भी कराया पर तुलनात्मक रूप से उन्होंने इस्लाम की तरह बल का प्रयोग नहीं किया- वरन् प्रलोभन दिया। अंग्रेजों ने कुटीर उद्योग को नेस्तनाबूत कर दिया जबकि मुसलमानों ने ऐसा नहीं किया। अंग्रेजों की मानसिकता मूलतः व्यापारिक सदैव से रही है। वे अपने राजमुकुट का सम्मान तो करते हैं पर राजमुकुट को भी फिजुल खर्च करने नहीं देते। इसलिये वस्त्र उद्योग आदि समाप्त कर दिये गये। ढाका के प्रसिद्ध मलमल की जगह कनिघम एंड कर्नाटक मिल्स के कपड़े ज्यादा प्रचलित हुए। अतः वे कच्चा माल भारत से ही कम कीमत पर ले जाते थे तथा बना कर देते थे इससे वे शोषण करते थे।

हिन्दुओं और मुसलमानों में भिन्नता और पृथकता सैकड़ों वर्ष से चली आ रही थी। लेकिन ब्रिटिश शासन से पूर्व किसी ने भी उनको कोई राजनीतिक महत्व नहीं दिया। ब्रिटिश शासन का एक प्रमुख परिणाम यह हुआ कि मध्यम वर्ग के बौद्धिक लोगों में सरकारी कामकाज के बारे में रूचि उत्पन्न हुई और वे राजनीति की ओर झुकने लगे। समय के साथ यह झुकाव और गहरा तथा व्यापक होता गया।

यह भारत का दुर्भाग्य था कि उसे न केवल सामान्य आंतरिक मतभेदों जातीय, सांस्कृतिक तथा साम्प्रदायिकता को सुलझाना पड़ा जो कि हर एक नवोदित देश को करना होता हैं बल्कि उन मतभेदों और झगड़ों से भी निबटना पड़ा

[1] 'भीष्म साहनी का अंतिम संस्कार' (पीएचपी). बीबीसी. अभिगमन तिथि 30 अक्टूबर 2008

जो भारतीय समुदायों में जानबूझकर या अनजाने में पैदा कर दिए गए थे।

संघर्ष के आरंभिक दिनों में हिन्दु और मुसलमान दोनों ही ने डोमिनियन हैसियत स्वीकार कर लिया था। लेकिन दोनों ही ने बाद में स्वाधीनता की माँग की। उनमें मतभेद इस बात पर था कि उनके अपने अपने हितों की सुरक्षा कैसे होगी, यह देखते हुए कि स्वाधीनता संघर्ष के अंतिम चरण में हिन्दू मुस्लिम मतभेदों पर इतना जोर दिया गया, यह गौर करना दिलचस्प होगा कि जहाँ तक व्यावहारिक प्रयास का सम्बन्ध है, हिन्दू और मुस्लिम विचारों में बहुत निकटता और समानता थी।

इसका एक विशिष्ट उदाहरण उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में राजा राममोहन राय के बुनियादी विचारों और उत्तरार्द्ध में सैय्यद अहमद खां के विचारों की समानता है दोनों धार्मिक नैतिक सामाजिक मामलों में तर्क की श्रेष्ठता स्वीकार करते थे। भारतीय सम्प्रदायों में सहयोग और सद्भाव की कमी के कारणों का जो विश्लेषण उन्होंने प्रस्तुत किया उसमें भी मध्यवर्गीय हितों पर जोर दिया गया है[2]

हम शायद एक दूसरे के इरादों को शक की नजर से देखते हैं और भीतर ही भीतर एक दूसरे पर हावी होने की बात सोचते हैं। शायद पारस्परिक सहयोग के उदात्त हित के लिए थी हम उन एकाधिकारियों का त्याग करने की स्थिति में अपने को नहीं पाते जिन्हें परिस्थितियों ने हमें सौपा है, और हमें अपने अहंता को राष्ट्रवाद के चोगे के अंदर छिपाए हुए बाहरी तौर पर उदारभावना देशभक्ति का दम भरते हैं लेकिन अन्दरूनी तौर पर किसी जाति या कबीले जैसी संकीर्ण मानसिकता लिए रहते हैं। शायद हम यह स्वीकार नहीं करना चाहते कि प्रत्येक समूह को अपनी सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार स्वतंत्र विकास का अधिकार है।

इन सन्देहों को दूर करने के लिए उन्होंने अपनी योजना रखी थी वह निसंदेह भारत को दो स्वाधीन प्रभुता सम्पन्न राज्यों में विभक्त करने की योजना नहीं थी। वह केवल प्रदेशों के पुनर्वितरण की योजना थी जो मुस्लिम बहुल थे। उन्हें विश्वास था कि यदि पंजाब, पश्चिमोत्तर सीमांत प्रांत, सिंध और बलूचिस्तान को एक स्वायत्त प्रदेश बनाने की उनकी योजना मान ली जाती है तो उससे भारत की समस्या हल हो जाएगी।

इससे मुसलमानों की जिम्मेदारी की भावना दृढ़ होगी और उनकी देशभक्ति के जज्बे गहरे होंगे। इस प्रकार भारतीय राजनीतिक तंत्र के अंतर्गत उनके विकास का पूरा अवसर रहेगा और पश्चिमोत्तर भारत के मुसलमान विदेशी आक्रमण के विरूद्ध सबसे प्रबल रक्षा पंक्ति सिद्ध होंगे चाहे वह आक्रमण विचारों का हो या तलवारों का। उनका उद्देश्य "एक सद्भावनापूर्ण राष्ट्र" का निर्माण करना था।

सन् 1921 में आगरा में खिलाफत सम्मेलन के अध्यक्ष पद से उन्होंने कहा- भारत के सात करोड़ मुसलमानों को अपने 20 करोड़ हिन्दू भाइयों से मिल जुल जाना चाहिए कि दोनों मिलकर एक जाति एक राष्ट्र हो जाए।

अबुल कलाम आजाद एक विद्वान तथा प्रबल राष्ट्रवादी हिन्दू मुस्लिम एकता के समर्थक नेता माने जाते हैं। 1912 में उन्होंने 'अल हिलाल' पत्रिका के साथ राजनीति में प्रवेश किया तथा घोषणा की कि मैं मुसलमान हूँ, और इस तथ्य पर गर्व अनुभव होता है कि मैंने 1300 वर्षो से अधिक की शानदार विरासत पाई है। मैं उसका छोटे से छोटा हिस्सा भी खोना नहीं चाहता। 1.मुसलमान के रूप में 2. वही, पृ.-300. उसके धार्मिक और सांस्कृतिक परिवेश में रहता हैं जिसमें मेरा विशिष्ट स्थान है मैं उसमें किसी की दखल होने नहीं दूंगा।"

"इन सब भावनाओं के साथ मेरी एक और भावना है कि जिसका जन्म मेरे जीवन के यथार्थ के साथ जुड़ा है। इस्लाम की प्रेरणा मुझे उस भावना से रोकती नहीं बल्कि उसे अपनाने को कहती है यह भावना है भारतीयता के गर्व की। मैं. महसूस करता हूँ कि मैं भारतीय हूँ और भारतीय राष्ट्रीयता का जो अविभाज्य है, एक अंग हैं।

दिल्ली के मुस्लिम शासक तुर्क, पठान और मुगल वंशों के थे। मुहम्मद गजनवी तुर्क वंश का था। तुर्क हूणों की एक विशिष्ट शाखा से सम्बद्ध है। तुर्क नाम की विशिष्ट टोपी के कारण इन्हें तुर्क कहा जाने लगा था। अरब साम्राज्य के टूटने के बाद तुर्क सरदार स्वतंत्र शासक बन बैठे थे। दिल्ली पर शासन करने वाले दूसरे लोग पठान थे। मुहम्मद गोरी पठान था। दिल्ली के अंतिम मुस्लिम शासक मुगल वंश के थे।

भारत में मुगल-वंश की नींव डालने वाला बाबर मंगोल जाति का था मंगोल बड़े ही वीर थे। संसार के इतिहास में अपनी क्रूरता और साहस के लिये प्रसिद्ध चिडरूहर यान या चंगेज खां मंगोल जाति का ही था।

इस प्रकार सातवीं शती में इस्लाम का भारत में प्रवेश हुआ और 16वीं शताब्दी तक आते आते भारत के तीन चैथाई हिस्से में फैल गया। भारत की संस्कृति का एक नयी संस्कृति से परिचय हुआ। तब से लेकर आज तक सांस्कृतिक दृष्टि से दोनों धर्म परस्परानुकूल नहीं हो पाये हैं। उनमें निरन्तर

[2] 'गोविंद निहलानी एनिमेशन के मैदान में' (एचटीएम). वेबदुनिया. अभिगमन तिथि 30 अक्टूबर 2008

www.ignited.in

अलगाव और कटुता बढ़ती गई है। दूसरी ओर यह भी स्मरण रखना है कि अपने आरम्भिक वर्षों में ही भारत की बहुत बड़ी जनता ने इस्लाम कबूल कर लिया था।

अनुसंधान क्रियाविधि

विभाजन पर आधारित उपन्यास

प्रस्तुत अध्याय 'भारत विभाजन पर आधारित उपन्यास' शीर्षक से लिखा गया है। इस अध्याय को शोध प्रबंध को प्राण केन्द्र माना जाता है। विषय बड़ा व्यापक है, अतः भारत विभाजन पर आधारित उपन्यासों को दो वर्गों में बाँटा गया है- 'खंड' 'अ' के अन्तर्गत उन प्रतिनिधि उपन्यासों को लिया गया है, जिनमें भारत विभाजन को पृष्ठभूमि बनाकर कथा वस्तु का गठन किया गया है। 'खंड' 'आ' के अंतर्गत उन प्रतिनिधि उपन्यासों पर विहंगम दृष्टि डाली गई है, जिनमें रचनाकार ने अपने ध्यान को घटनाओं पर केन्द्रित किया है। उपन्यासों का विश्लेषण करते हुए सर्वत्र संतुलन बनाए रखने की चेष्टा की गई है। कहीं ऐसा भी हो गया है कि पृष्ठभूमि का विश्लेषण करते हुए घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित हो गया है। वास्तव में विषय वस्तु की दृष्टि से दोनों एक दूसरे के अनुपूरक ही माने जायेंगे।[3]

"संस्कृति के चार अध्याय" ग्रंथ में रामधारी सिंह दिनकर ने उल्लेख किया है- भारतीय संस्कृति में चार बड़ी क्रांतियाँ हुई हैं

1. पहली क्रांति जब आर्य भारत में आए और अन्य आर्येतर जातियों से उनका सम्पर्क हुआ। आर्यों ने आर्येत्तर जातियों के साथ मिलकर समाज की रचना की। इस तरह आर्य और आर्येत्तर संस्कृतियों के मिलन से जो संस्कृति उत्पन्न हुई, वही हिन्दू सभ्यता या भारतीय बनी।

2. दूसरी क्रांति तब हुई, जब महावीर और बुद्ध ने इस स्थापित धर्म या संस्कृति के विरुद्ध विद्रोह करके उपनिषदों की चिन्तन धारा को अपनी ओर खींचा।।

3. तीसरी क्रांति, तब हुई, जब इस्लाम विजेताओं के धर्म के रूप में भारत पहुँचा और हिन्दुत्व के साथ उसका सम्पर्क हुआ।

4. चैथी क्रांति, तब हुई जब भारत में यूरोप का आगमन हुआ और उसके सम्पर्क में आकर हिन्दुत्व एवं इस्लाम में नवजीवन का अनुभव किया गया।

[3] 'भीष्म साहनी का तमस' (पीएचपी). ताप्तीलोक. अभिगमन तिथि 30 अक्टूँबर 2008

भारत विभाजन इस युग की एक दर्दनाक ऐतिहासिक घटना है। स्थूल और शारीरिक रूप में ही विभाजन एक दुर्घटना नहीं थी, यह एक मानवीय त्रासदी थी जिसने लाखों लोगों को भावनात्मक, विचारात्मक, मनोवैज्ञानिक, मानसिक और आत्मिक स्तरों पर प्रहार किया था। यह दुर्घटना केवल राजनैतिक या किसी एक वर्ग विशेष से जुड़ी हुई भी नहीं थी, बल्कि इससे लाखों करोड़ों लोगों की जिन्दगी उनका वर्तमान और भविष्य, उनकी सभ्यता और संस्कृति, उनका आचरण और व्यवहार भी जुड़ा हुआ था।

हिन्दी लेखन में, विशेषकर कथा साहित्य में विभाजन की त्रासदी को उसकी राजनीतिक, सामाजिक और साम्प्रदायिक पृष्ठभूमि को समझने यानी इतिहास को उसके संश्लिष्ट रूप में टटोलने - ऑकने का उपक्रम दिखता है।

'झूठा-सच' एक वृहत्काय उपन्यास है जिसमें 1942 से 1957 तक के भारतीय परिवेश की तत्कालीन घटनाओं और परिस्थितियों के विस्तार मानवीय सत्यों की विराटता, आधुनिक परिवेश एवं मूल्यों का कलात्मक सामन्जस्य उपस्थित हुआ है जो निश्चित ही हिन्दी लेखन में अन्यत्र दुर्लभ है। भीष्म साहनी कृत 'तमस' देश के विभाजन से पूर्व घृणा, विद्वेष, अविश्वास, कूटनीति और शंका से बोझिल अंधेरे के पाँच दिनों का मर्मस्पर्शी आख्यान आज के साम्प्रदायिक तनाव भरे वातावरण में एक प्रासंगिक कृति है।

यह विश्लेषण यहाँ इसलिए किया गया है कि भारत विभाजन की पृष्ठभूमि के रूप में इन चारों क्रांतियों की ओर घटना-विशेष के रूप में रचनाकारों ने हमारे ध्यान को आकृष्ट करने का प्रयास किया है। इस संदर्भ में यशपाल का उपन्यास 'झूठा सच' एक ऐसा उपन्यास सिद्ध होता है, जिसमें भारत विभाजन की विशद् पृष्ठभूमि भी है और घटना का अन्तर्निवेश भी है। उपन्यासकार ने इस तथ्य को 'झूठे सच' के रूप में स्थापित किया है। लगभग ऐसे ही परिवेशों को लेकर बीज, निशिकांत, सत्ती मैय्या का चैरा, भूले बिसरे चित्र, तमस, और तेरी, मेरी उसकी बात उपन्यासों की रचना की गई है।

घटना विशेष के विश्लेषण की दृष्टि से 'और इन्सान मर गया' 'देश की हत्या' सच और आधा गाँव उपन्यासों की रचना की गई है।

यशपाल ने देश के बंटवारे के समय और उसके पूर्व-पश्चात् की साम्प्रदायिक विभीषिका में जलते हुए भारत और पाकिस्तान की जन-यातना का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। देखने में लगता है कि दोनों देशों की जनता स्वभावतः

अपने साम्प्रदायिक विद्वेष की आग में धधक उठी थी किन्तु यह होकर भी झूठ था। सच था जनता को बर्गला कर अपने को तृप्त करने वाली राजनीतिक नेताओं की अमानवी प्यास।

किन्तु क्या यह कथा केवल विभाजन की कथा है, नहीं, उस कथा के भीतर भी एक कथा चलती है जो विभाजन की कथा के न होने पर भी चलती और जो प्रकारान्तर से यशपाल के अन्य उपन्यासों में चलती रही है। वह है मानव - मन की कथा यशपाल मानव को उसके परिवेश से अलग करके नहीं देखते, इसलिये उसके मन की कथा का अर्थ है उसके ऊपर पड़े हुए उसके वर्ग, परिवेश, परम्परा और काल के संस्कार की कथा।[4]

(अ) पृष्ठ भूमि पर केन्द्रित उपन्यास - झूठा-संच: पूर्वार्ध -

यशपाल कृत 'झूठ-सच' के दो भाग हैं-'वतन और देश'-1958 तथा 'देश का भविष्य' 1960 एक वृहदकाय उपन्यास है। जिसमें 1942 से 1957 तक के भारतीय परिवेश का अर्थात देश विभाजन की पूर्ववर्ती पृष्ठभूमि, विभाजन की प्रक्रिया तथा परवर्ती परिणाम सभी की प्रस्तुती करती है इससे भारतीय सामाजिक, राजनीतिक जीवन की एक व्यापक व अन्तरंग झाँकी अंकित की गई है।

समाज में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक परिवेश का सम्यक विश्लेषण भारत विभाजन् की पृष्ठ भूमि पर उपन्यास में विभाजन के समय सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष साम्प्रदायिक चेतना को लिया गया है, जिसे लेखक ने लोगों के दिमाग में बैठी हुई जड़ता और विवेकहीनता से जोड़ा है और यह बताने की कोशिश की है कि निम्न मध्य वर्ग के संदर्भ में इसका प्रभाव समाज के विभिन्न हिस्सों में फैलता है और अंत में अमानवीय हो उठता है।

लाहौर की भोलापांधे गली कथा का सूत्रपात करती है। लाहौर की भोलापांधे गली, अपनी समग्रता में परंपरावादी प्रवृत्तियों, परस्पर मानवीय आबद्ध संस्कारों का प्रतीक रूप है। आधुनिकता का स्पष्ट प्रभाव गली के जीवन में यदा कदा दिखलाई पड़ता है। तारा और जयदेव परम्परावादी रूढ़िग्रस्तता के बावजूद आधुनिक होने पर एहसास देते हैं। खत्री पुरी और ब्राह्मण कन्या का प्रेम विवाह इस आधुनिकता का रोमानी प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। धार्मिक एवं रूढ़ पारिवारिक एवं वैवाहिक बंधनों को तोड़कर तारा असद को समर्पित होने के लिये उद्यत रहती है। कथानक के ये पात्र हमारे सम्मुख सामाजिक यथार्थ को चित्रांकित करते हैं।

लेखक ने सेक्स, विवाह, प्रेम, अर्थ, राजनीति और धर्म के विविध आयामों तथा जर्जर खोखला एवं विश्रृंखलित समाज की मानसिकता को प्रस्तुत किया है, परम्पराओं और रूढ़ियों से ग्रस्त पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश ही तारा का नगर के गुंडे सोमराज के साथ विवाह कर लेने के लिये मजबूर कर देता है। बाद में उसका क्रांतिकारी कदम परिवर्तित परिवेश में सामाजिक यथार्थता के फलस्वरूप उसके विद्रोह को मुखरित करता है।

इतिहास की भौतिकवादी मान्यता समाज के परिवर्तनों और उसके पीछे होनेवाले संघर्षों की जड़ में आर्थिक विषमता के एकमात्र कारण को स्थापित करती है। व्यक्ति स्तर से शुरू होकर राष्ट्रीय स्तर तक विध्वंस और विघटन के केन्द्र में आर्थिक विषमता मौजूद है। 'वतन और देश' अंश में यशपाल ने आर्थिक असमानता की यथार्थवादी पहचान स्थापित करते हुए संकेत किया है कि हिन्दुस्तान के विभाजन का कारण धर्म एवं कुत्सित राजनीतिक निर्णय ही है, पर धार्मिक रूढ़ियों की विध्वंसात्मक परिणति। सामाजिक स्तर। उपन्यास में वहाँ उभरकर सामने आयी है, जहाँ तारा को अनिच्छा से सोमराज से विवाह करना पड़ता है।

दूसरे खंड में आर्थिक एंव सामाजिक मूल्यों में होने वाले परिवर्तन का चित्र है। लाहौर से आया हुआ शरणार्थियों का विशाल जनसमुदाय अपने श्रम के बल पर नये समाज के सृजन के लिये कटिबद्ध है, एवं आधुनिक विचारों के आलोक में परम्परागत बंधनों को तोड़ने एवं विजातीय विवाह के लिये तत्पर है, सीता का विवाह और शीलो को अपने पति मोहन को छोड़कर पूर्व प्रेमी रतन के यहाँ चली जाना इसी बात का स्पष्ट संकेत शोषक और शोषित शक्तियों का संघर्ष धार्मिक कटुता और पूंजीवादी वातावरण में पनपता है लाहौर में पुरी जैसे छोटे पत्रकार का प्रेस से अलग करना इस तथ्य को प्रमाणित करता है। स्वाधीनता के लिये जिन शक्तियों ने साम्राज्यवादी शासन का विरोध किया, वह वास्तव में पतनशील बुर्जुआ समाज था जो सत्ता के हस्तान्तरण के पश्चात् स्वयं दूसरों का शोषण करने के लिये तत्पर दिखता है। सूद और पुरी इस समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन शक्तियों का विरोध विकासशील समाजवादी शक्तियों द्वारा किया जाता है। जिसका प्रतिनिधित्व तारा और डॉ. प्राणनाथ करते हैं।

सामाजिक एवं नैतिक संबंधों के निर्धारण में आर्थिक शक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सम्पन्न पुरी उर्मिला से अवैध संबंध स्थापति करने पर भी समाज में प्रतिष्ठित और राजनीति में सूद का सलाहकार होता है। तारा और डॉ. प्राणनाथ आर्थिक दृष्टि से विपन्न होते तो निश्चित

[4] 'तमस' (पीएचपी). भारतीय साहित्य संग्रह. अभिगमन तिथि 30 अक्टूबर 2008

www.ignited.in

ही वे विवाह संबंध स्थापित करके नैतिक मूल्यों का निर्धारण नहीं कर पाते। आर्थिक स्वार्थ ही तो वजह है, जो सूद और सोमराज को निकट लाकर खड़ा कर देती है।

उपन्यास में चित्रित राजनैतिक पक्ष अत्यधिक विद्रूप, विषमतापूर्ण और घिनौना है। राजनीतिज्ञ किसी धर्म, मजहब एवं किसी व्यक्ति का कल्याण नहीं चाहते। उनका हर कार्य अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये होता है। अगर जिन्ना के सम्मुख अत्यंत घृणित स्वार्थ से परिपूर्ण महत्वाकांक्षा न होती तो आज भारत का विभाजन असंभव था।

जनता की अशिक्षा, धर्मान्धता, परम्परा, प्रेम तथा अवैज्ञानिक दृष्टि के कारण राजनैतिक नेताओं ने उन्हें जैसा चाहा गुमराह किया, जिसमें सर्वाधिक सफलता उन्हें साम्प्रदायिक भावना को भड़काकर प्राप्त हुई।

साम्प्रदायिक उत्तेजना से भरी राजनीति और इस दौर में होने वाले अमानवीय, बर्बर, घृणित एवं पाशविक कृत्यों ने सार्वजनिक नागरिक जीवन का अंत कर हिन्दू, मुस्लिम जेहाद के नारे लगाने वालों का अस्तित्व किस प्रकार समाप्त कर दिया, इसका अत्यंत सहज, सरल, मार्मिक चित्रण हमें प्रस्तुत उपन्यास में दृष्टिगोचर होता है।

स्वाधीनता से पूर्व मजहब के लिये हो रहे संघर्ष में साम्प्रदायिकता एवं अराजकता को खुलकर खेलने का मौका मिला। दिन दहाड़े एक धर्म के लोगों ने दूसरे धर्म के लोगों का कत्ल कर दिया। मानवीयता, इंसानियत मानों मर चुकी थी, जो जितना सीधा एवं निर्मल हृदय होता है, वह निर्मम पाशविकता का ग्रास उतनी ही जल्दी बनता है। भोलापांचे की गली का दौलू मामा ऐसा ही उदाहरण है जिनके लिये जयदेव पुरी ने संपादकीय में इन विचारों को कुछ इन शब्दों में व्यक्त किया। दौलूमामा तुम लाहौर की कितनी गलियों के कितने बच्चों के मामा थे। तुम उम्र भर रोजाना सैकड़ों बच्चों को हंसा हंसा आज उन्हें रोते छोड़ गये हो। इन भोले बच्चों का खिलौना किस जालिम ने छीन लिया? मामा किसका दुश्मन था? मामा न यूनियनिस्ट मंत्रीमंडल से मतलब रखता था न लीग से। वह तो मानव था, केवल निरीह मानव उसका खून मानवता का खून है। बेबस मानव का खून है। मानवता के खून की इस प्यास को कौन भड़का रहा हैं? दौलूमामा ने एक खाट की जगह के लिये भी, एक रोटी के लिये भी कभी किसी से झगड़ा नहीं किया। वह किसकी वजारत और रियासत की राह में रूकावट बन रहा था?

यदि तुलनात्मक अध्ययन करें तो विषय वस्तु के विश्लेषण की दृष्टि से रामानांद सागर के उपन्यास 'और इंसान मर गया' की रूपरेखा भी इसी प्रकार की मिलेगी, अंतर केवल पात्रों के नामों की भिन्नता है।[5]

'झूठा सच' उपन्यास में दोलू मामा के बारे में आगे कहा गया है- मामा जब तुमसे खुदा तुम्हारे कातिल का नाम पूछेगा तो तुम्हारी ऊंगली किसकी तरफ उठेगी? क्या खुदा नहीं जानता कि तुम्हारे कत्ल के लिये उत्तेजना दिलाने की जिम्मेदारी उन नेताओं पर है जो तुम्हारे जैसे इंसानों को शासन के सिंहासन पर पहुंच सकने का जीना बनाने के लिये जनता का ईंट गारे की तरह प्रयोग करना चाहते हैं। क्या हमारे सर्व-साधारण स्वार्थ में अंधे और क्रूर लोगों के स्वप्नों के महलों में पहुँचने के जीने बनते रहेंगे। क्या सर्वसाधारण अपने नेताओं को मानवता की कसौटी पर जाँचकर नहीं परखेंगे? क्या अपने स्वार्थों के लिये सर्व-साधारण को अंधा बना देना ही धर्म की रक्षा, प्रजातंत्र और जनवाद है?

उपन्यास में वर्णित उपर्युक्त घटना विशाल पटल पर तात्कालीन मौजूदा परिस्थितियों को स्पष्ट करती है।

उस दौर में स्थान स्थान पर पाशविकता की करूण गाथा के दृश्य देखने को मिले। इस विभाजन ने सामूहिक हत्या, आगजनी के दौर से लाखों निरपराध हिन्दू मुसलमानों को अपने पुरखों की जमीन छोड़ने के लिये विवश किया। उस दौर में हो रहे स्त्री-असम्मान, अपहरण एवं बलात्कार की असंख्य घटनाओं का अंदाज उपन्यास के नारी पात्र बंतो तथा तारा की जीवन झाँकी से सहज ही लगती है। ऐसी स्थितियों का चित्रण भीष्म साहनी के उपन्यास "तमस" में भी किया गया है। ये घटनाएँ इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि आदमी का साम्प्रदायिकता के मद में कितना नैतिक पतन हो चुका था।

विश्लेषण

राल्फ फॉक्स मानता है, साहित्य में जीवन के विषय में लेखक के राय की दरकार नहीं, वहाँ जीवन की तस्वीर चाहिए। जीवन की यह तस्वीर स्वयं लेखक की दृष्टि को स्पष्ट कर देती है। भीष्म साहनी की उपन्यास दृष्टि के संदर्भ में यह कथन महत्व रखता है, साथ ही यहाँ भारतीय सामाजिक संरचना का साम्प्रदायिक और वर्गीय ढाँचा भी विशेष महत्व रखता है। स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक का भारतीय समाज जाति, धर्म और सम्प्रदाय के तिगड्डे पर भड़राता रहा है। वर्ग बनते और बिगड़ते रहे क्योंकि इनके मूल के उत्पादन सम्बन्धों में परिवर्तन होता रहा है। ये उत्पादन सम्बन्ध अलगाव और बिखराव की

www.ignited.in

स्थिति उत्पन्न करते रहे, क्योंकि उत्पादन साधनों पर विघटनकारी शक्तियों का प्रभुत्व रहा है।

भारतीय सामाजिक संरचना में नियतिवाद की जड़ें काफी गहरी और पुरानी है। यह नियतिवादी विचारधारा पीढ़ियों से इस देश की चेतना में धुन्ध बनकर छाई है। इसका परिणाम यह हुआ कि मानवीय जीवन आस्था को विकृत करने वाले तत्व सक्रिय रहे और विकृतियों से ग्रस्त मनुष्य आर्थिक कारणों को खोजने में असमर्थ रहा। यहीं से श्रम का अवमूल्यन प्रारम्भ हुआ। श्रम से अनास्था का जन्म नियतिवाद में आस्था को पुष्ट करता है, साथ ही उचित मूल्य के अभाव में श्रम से अविश्वास और परायापन और भी हो जाता है। विभेद के कई औजार बहुत पहले से यहाँ गढ़ लिए गये। हिन्दी उपन्यास साहित्य में इस तथ्य को सफलता के साथ उद्घाटित किया गया है। प्रेमचंद, यशपाल, नागार्जुन और रेणु नियतिवादी संस्कारों को प्रस्तुत करते हुए भी मनुष्य को आर्थिक कारणों की पहचान कराते हैं, इसीलिए उनके प्रतिनिधि चरित्र इस दर्शन से मुक्ति के लिए संघर्षरत हैं और उनका यह संघर्ष आर्थिक संघर्ष के रूप में प्रकट होता है। भीष्म साहनी इसी परम्परा का विकास करते हैं, जड़ बनाने वाले नियतिवादी दर्शन का समर्थन नहीं।

उपसंहार

आजादी के ठीक पहले सांप्रदायिकता की बैसाखियाँ लगाकर पाशविकता का जो नंगा नाच इस देश में नाचा गया था, उसका अंतरग चित्रण भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में किया है। काल-विस्तार की दृष्टि से यह केवल पाँच दिनों की कहानी होने के बावजूद इसे लेखक ने इस खूबी के साथ चुना है कि सांप्रदायिकता के हर पहलू का तार-तार उद्घाटित हो जाता है और पाठक सारा उपन्यास एक साँस में पढ़ जाने के लिए विवश हो जाता है। भारत में साम्प्रदायिकता की समस्या एक युग पुरानी है और इसके दानवी पंजों से अभी तक इस देश की मुक्ति नहीं हुई है। आजादी से पहले विदेशी शासकों ने यहाँ की जमीन पर अपने पाँव मजबूत करने के लिए इस समस्या को हथकंडा बनाया था और आजादी के बाद हमारे देश के कुछ राजनीतिक दल इसका घृणित उपयोग कर रहे हैं। और इस सारी प्रक्रिया में जो तबाही हुई है उसका शिकार बनते रहे हैं वे निर्दोष और गरीब लोग जो न हिन्दू हैं, न मुसलमान बल्कि सिर्फ इन्सान हैं और हैं भारतीय नागरिक। भीष्म साहनी ने आजादी से पहले हुए साम्प्रदायिक दंगों को आधार बनाकर इस समस्या का सूक्ष्म विश्लेषण किया है और उन मनोवृत्तियों को उघाड़कर सामने रखा है जो अपनी विकृतियों का परिणाम जनसाधारण को भोगने के लिए विवश करती हैं।

संदर्भ

1. 'भीष्म साहनी का अंतिम संस्कार' (पीएचपी). बीबीसी. अभिगमन तिथि 30 अक्टूबर 2008
2. 'गोविंद निहलानी एनिमेशन के मैदान में (एचटीएम). वेबदुनिया. अभिगमन तिथि 30 अक्टूबर 2008
3. 'भीष्म साहनी का तमस' (पीएचपी). ताप्तीलोक. अभिगमन तिथि 30 अक्टूबर 2008
4. 'तमस' (पीएचपी). भारतीय साहित्य संग्रह. अभिगमन तिथि 30 अक्टूबर 2008
5. गोपाल, राय (2014). हिन्दी उपन्यास का इतिहास. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 303. आई॰एस॰बी॰एन॰

Corresponding Author

Bhaskar Mishra*

Research Student, Visva-Bharati Shanti Niketan, West Bengal

ravimishra973@gmail.com